प्रगति-आख्या

2009-2014

काशी योग एवं मूल्य शिक्षा संस्था

Kashi Institution of Yoga & Value-education

35, दीनदयाल नगर कालोनी, नवाबगंज

वाराणसी (उ०प्र०) 221010

मो० : 09450872823

E-mail : kashiyogasanstha@mail.com

संरक्षक

परमपूज्य कार्ष्णि स्वामी श्री गुरुशरणानन्द जी
महाराज (रमणरेती, मथुरा)

अध्यक्ष

प्रो० कमलाकर मिश्र

उपाध्यक्ष

प्रो० अजित नारायण त्रिपाठी

कोषाध्यक्ष

प्रो० विभा त्रिपाठी

सचिव

डॉ० धर्मेन्द्र कुमार मिश्र

सदस्य

प्रो० सुभाष चन्द्र लखोटिया

प्रो० चन्द्रकला पाडिया

प्रो० हरिशंकर सिंह

डॉ० मारकन्डेराम पाठक

डॉ० धर्मजंग

स्वामी ब्रज चैतन्य

डॉ० प्रमोद कुमार सिंह

❖ संस्था के उद्देश्य एवं कार्य -

- शैक्षणिक उत्थान हेतु विभिन्न स्तरीय विद्यालयों की स्थापना कर सामान्य, व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा, शारीरिक एवं मूल्य–शिक्षा, योग, कला, संगीत, विज्ञान व चिकित्सा आदि से सम्बन्धित शिक्षा के विविध आयाम तैयार करना।
- स्वास्थ्य सुधार हेतु रचनात्मक कार्यक्रम संचालित्त कर सामान्यजन के स्वास्थ्य की उन्नति एवं रोग निवारण हेतु स्वास्थ्य शिविर लगाना। योग एवं प्राकृतिक, आयुर्वेदिक चिकित्सा केन्द्रों का संचालन करना।
- समाज के निर्बल एवं उपेक्षित जन समुदाय को आर्थिक सहयोग एवं जीविकोपार्जन के कार्यक्रमों से जोड़ना।
- बाल कल्याण एवं महिला कल्याण कार्यक्रम संचालित करना।
- ग्रामीण एवं शहरी विकास कार्यक्रम संचालित करना।
- साधनहीन विद्यार्थियों को शिक्षा हेतु साधन उपलब्ध कराना।
- मूल्य–शिक्षकों के निर्माण एवं मूल्य–शिक्षा के प्रसार व मूल्य–शिक्षा सम्बन्धी अध्ययन एवं शोधकार्य हेतु प्रशिक्षण केन्द्र, शोध केन्द्र, पुस्तकालय, वाचनालय संचालित करना।
- आकस्मिक आपदाओं के समय जन सामान्य के सहायतार्थ कार्यक्रम संचालित करना।
- पर्यावरण एवं जैविक–आयुर्वेदिक कृषि हेतु विभिन्न कार्यक्रम संचालित करना।
- विभिन्न व्यक्तियों, संस्थाओं के मध्य सामुदायिक व रचनात्मक सम्बन्ध स्थापित करने हेतु विभिन्न कार्यक्रम संचालित करना।

❖ मुख्य गतिविधियाँ -

- महामना पं0 मदन मोहन मालवीय बाल चेतना विकास केन्द्रों का संचालन करना।
- ग्रामीण ज्ञान केन्द्रों का संचालन करना।
- स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन करना।
- योग एवं मैत्री–ध्यान साधना केन्द्रों का संचालन करना।
- गरीब एवं नेत्र–विहीन विद्यार्थियों के लिए अध्ययन सामग्री की व्यवस्था करना।
- गौशाला एवं जैविक खाद निर्माण हेतु गोपालन केन्द्रों का संचालन करना।
- पर्यावरण सन्तुलन हेतु वृक्षारोपण कार्यक्रम संचालित करना।

❖ पं० मदन मोहन मालवीय बाल-चेतना विकास केन्द्र

संस्था आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़े सभी धर्मों के बच्चों के बौद्धिक, नैतिक एवं सामाजिक विकास हेतु वर्ष 2006 से विभिन्न जगहों पर पं0 मदन मोहन मालवीय बाल चेतना विकास केन्द्रों का संचालन कर रही है।

इस तरह के केन्द्र जिला–वाराणसी, सोनभद्र एवं महोबा के कुछ गाँवों मे संचालित किये जा रहे हैं। इन केन्द्रों में पढने वाले पिछडे वर्ग के बच्चों के शैक्षिक स्तर में काफी सुधार देखने को मिला।

यद्यपि इस क्षेत्र में कार्य करने की अधिक सम्भावना एवं आवश्यकता है।

लेकिन संस्था ने अपने सीमित संसाधनों से जो भी प्रयास किया है, उससे बहुत ही सकारात्मक परिणाम आये हैं।

1. जो बच्चे पढाई से भागते थे, उनमें पढ़ाई के प्रति रुचि जाग्रत हुई।
2. जो माता–पिता बच्चों को बालश्रमिक के रूप में काम पर भेजते थे, उनकी सोच में परिवर्तन आया हैं।
3. बच्चों में स्वास्थ्य साफ–सफाई आदि के प्रति रूचि बढी है।
4. बच्चों के मन में कुछ करने, बनने की प्रबल इच्छा जाग्रत हो रही है।

❖ बाल चेतना विकास केन्द्र से स्कूल की ओर -

संस्था वर्ष 2006 से बाल शिक्षा के क्षेत्र में जो भी कार्य कर रही थी, उससे संस्था की यह समझ बनी कि पिछड़े परिवार के बच्चों को केवल दो घण्टे बाल चेतना विकास केन्द्रों में पढाने–लिखाने मात्र से बच्चों का सम्पूर्ण विकास सम्भव नहीं है, इसके लिए आवश्यकता है, एक गुणात्मक शिक्षा देने वाले विद्यालय की स्थापना।

संस्था के पास अपने सीमित आर्थिक संसाधन थे, इसलिए संस्था ने स्वयं ऐसा विद्यालय खोलने की जगह अन्य समान विचारधारा वाली

संस्था **'बुन्देलखण्ड ग्राम–सेवा भारती'** काकुन (महोबा) के साथ मिलकर ग्राम–काकुन, जिला–महोबा (उ0 प्र0) में एक विद्यालय की स्थापना की है।

यह विद्यालय महान सन्त ब्रह्मलीन स्वामी शान्तानन्द सरस्वती जी महाराज बद्रिकाश्रम (हिमालय) के नाम से संचालित हो रहा है। इस विद्यालय को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा कक्षा 1 से लेकर 10 वीं कक्षा तक स्थाई मान्यता प्रदान की गयी है।

वर्तमान में इस विद्यालय में 350 छात्र-छात्रायें अध्ययनरत हैं। इन बच्चों मे 200 बच्चे शुल्क देने वाले और 150 बच्चे काशी योग एवं मूल्य–शिक्षा 'संस्था' के सहयोग से निःशुल्क पढ़ाये जा रहे हैं।

विद्यालय के भवन निर्माण आदि में संस्था के संरक्षक कार्ष्णिपीठाधीश्वर पूज्य स्वामी श्री गुरुशरणानन्द जी महाराज, रमणरेती (महावन), मथुरा और संस्था के अध्यक्ष प्रो0 कमलाकर मिश्रा जी ने व्यक्तिगत रूप में आर्थिक मदद की है। इस विद्यालय के शैक्षणिक कार्यक्रमों के संचालन में **'काशी योग एवं मूल्य–शिक्षा संस्थ'** के सदस्यों द्वारा सहयोग दिया जा रहा है।

संस्था के सहयोग से इस विद्यालय में वर्ष 2009 से अध्ययनरत गरीब परिवार की 10 छात्राओं ने बारहवीं तक की शिक्षा पूर्ण कर इस वर्ष स्नातक प्रथम वर्ष में प्रवेश लिया है।

❖ ग्रामीण ज्ञान केन्द्र -

वर्ष 2007–2008 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान द्वारा संचालित ग्रामीण ज्ञान केन्द्र के कार्यक्रमों को जिला–सोनभद्र के 14 गाँवों में संचालित करने हेतु **'काशी योग एवं मूल्य शिक्षा संस्था'** को सहयोगी संस्था के रूप में चुना गया था।

संस्था द्वारा इस योजना के आधार पर दो केन्द्र ग्राम रौप (बन्तरा) जिला–सोनभद्र एवं ग्राम–पसही कला (राबर्टसगंज ज़िला–सोनभद्र) में प्रारम्भ किये गये थे। संस्था द्वारा वर्ष 2008, 09, 10, 11 में इन केन्द्रो के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र

के किसान बन्धुओं को उन्नत कृषि, पशुपालन, बागवानी, जल प्रबन्धन आदि का तकनीकी ज्ञान प्रदान किया गया, जिससे गाँवों के किसान भाइयों की आर्थिक स्थिति को सुधारा जा सके।

इस केन्द्र के माध्यम से ग्रामीण युवाओं को कम्प्यूटर प्रशिक्षण एवं स्वावलम्बन, कुटीर उद्योग आदि सन्दर्भ में ज्ञान प्रदान किया गया। वर्ष 2012 से संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा इन ग्रामीण ज्ञान केन्द्रों को सहयोग देना बन्द कर दिया, जिससे ग्रामीण ज्ञान केन्द्रों द्वारा दिये जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रम स्थगित हो गये।

लेकिन संस्था ने इन केन्द्रों की उपयोगिता को देखते हुए अपने सीमित ससाधनों से महोबा जिले के ग्राम–काकुन में एक ग्रामीण ज्ञान केन्द्र स्थापित किया है।

इस ग्रामीण केन्द्र द्वारा गाँव के समीप स्थित विभिन्न गाँवों के किसानों एवं युवाओं को कृषि, बागवानी, पशुपालन, जल प्रबन्धन आदि के सन्दर्भ में प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

पशुपालन कार्यक्रम के तहत इस गाँव में 200 लीटर/प्रतिदिन दूध का उत्पादन प्रारम्भ हो गया है। संस्था का लक्ष्य है कि वर्ष 214–2015 में दुग्ध उत्पादन का कार्य 600 ली/ प्रतिदिन तक हो जायें। दुग्ध उत्पादन के साथ–साथ जैविक खाद को तैयार करने और जैविक खेती के प्रति भी किसानों को प्रेरित किया जा रहा है।

ग्रामीण ज्ञान केन्द्र के माध्यम से स्कूल के छात्र–छात्राओं, ग्रामीण युवाओं को कम्प्यूटर प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। इस प्रशिक्षण को नियमित रूप से जारी रखने हेतु संस्था की ओर से कम्प्यूटर केन्द्र भी खोला गया है।

❖ संगोष्ठियों द्वारा जन जागृति कार्यक्रम -

संस्था ने अपने उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए ग्रामीण युवाओ, किसानों के साथ सहसम्बाद्र स्थापित करने हेतु समय–समय पर अनेक संगोष्ठियां, चौपालों परिचर्चाओं का भी आयोजन किया है जो आगे भी जारी रहेगा।

इस श्रृंखला में 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' वाराणसी के विद्वानों, कुछ अनुभवी समाजसेवियों, महोबा के जिलाधिकारी एवं अन्य अधिकारियों की उपस्थिति में दो विषयों पर एक दिवसीय संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया था। इस संगोष्ठी की संक्षिप्त रपट इस प्रकार है –

विषय : ग्रामीण बच्चे और शिक्षा

दिनांक : 27 अक्टूबर 2013, दिन : रविवार

समय : प्रातः 10 बजे से 12 बजे तक

❖ सहभागी प्रमुख अतिथि -

प्रो0 अजित नारायण त्रिपाठी मालवीय मूल्य अनुशीलनकेन्द्र का0 हि0 वि0 वि0 वाराणसी, प्रो0 कमलाकर मिश्र अवकाश प्राप्त आचार्य 'दर्शन एवं धर्म विभाग, का0 हि0 वि0', श्री शुभनारायण सिंह, लखनऊ, स्वामी ब्रजचैतन्य जी, महाराज वाराणसी, डॉ0 धनंजय, डॉ0 प्रमोद सिंह, डॉ0 धर्मजंग, वाराणसी एवं स्कूल के अध्यापको विभिन्न गाँवों एवं, चरखारी–महोबा के प्रबुद्धजनों ने बडी संख्या में भागीदारी निभायी।

इस संगोष्ठी के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों के शैक्षणिक सुधार और शिक्षा में अधिकतम भागीदारी के विषय में विस्तृत चर्चा हुई। अधिकतम विद्वानों और ग्रामवासियों ने यह विचार रखा कि 'काशी योग एवं मूल्य–शिक्षा संस्था', वाराणसी एवं 'बुन्देलखण्ड ग्राम सेवा भारती', महोबा द्वारा संयुक्त रूप से संचालित विद्यालय एवं बाल चेतना विकास केन्द्र के प्रयास से ग्रामीण बालिकाओं की शिक्षा में बड़ी संख्या में भागीदारी हो रही है।

यहाँ के लगभग 10 गाँवों की बालिकाओं को स्वतंत्रता के बाद पहली बार स्थानीय स्तर पर माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा मिल रही है। वर्ष 2008 के पहले

यहाँ की 40 प्रतिशत बालिकायें ही आठवीं तक की शिक्षा ग्रहण कर पाती थी, लेकिन इस विद्यालय की स्थापना के कारण विगत चार वर्ष में लगभग 200 बच्चियों ने 9वीं, 10वीं, 11वीं, 12वीं, तक की शिक्षा ग्रहण की है और इनमें से 10 बालिकायें स्नातक की पढ़ाई कर रही हैं।

❖ जल संचय एवं जल प्रबन्धन का कार्यक्रम -

'काशी योग एवं मूल्य–शिक्षा संस्था' का मानना है कि पानी प्रकृति द्वारा दिया गया अमूल्य उपहार है। जल के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। पानी प्रत्येक जीव के लिए उतना ही अहम है, चाहे वह कोई सूक्ष्म जीवाणु हो या फिर भारी भरकम हाथी। हम धरती पर इसलिए है क्योंकि यहाँ पानी मौजूद है।

प्रसिद्ध विद्वान थामस किंग के शब्दों में –

''जैसे कि हम जानते हैं, धरती पर मौजूद सभी पदार्थों में पानी सबसे साधारण, सबसे महान् और सबसे आश्चर्य जनक है, फिर भी अधिकतर लोग इसके बारे में बहुत कम जानते हैं।''

इन्ही सब बिन्दुओं पर गहन अध्ययन चिंतन के बाद संस्था ने वर्षा जल संग्रहण के एक वृहद् कार्यक्रम की शुरूआत बुन्देलखण्ड क्षेत्र के जिला–महोबा के ग्राम–काकुन से की है।

संस्था ने इस कार्य की प्रेरणा वर्ष 2006 में जिला देवास (म0प्र0) में नियुक्त जिलाधिकारी श्री उमाकांत उमराव द्वारा इस जिले में कराये गये जल प्रबन्धन कार्यक्रम से ली। देवास जिले में वर्ष 2006 से पूर्व 100 बिगहे रकबे वाले किसान कर्ज में डूब चुके थे और यह देश का दूसरा विदर्भ बनने जा रहा था। श्री उमाकांत उमराव ने किसानों को सरकारी नारों **'जल बचाओ, जीवन बचाओ'** से मुक्त करके उन्हें **'जल बचाओ, लाभ कमाओ'** के सपने दिखाये। **'खेत का पानी–खेत में', 'खेत की मिट्टी–खेत में'** जैसे नारे दिये। उन्हें यह बात समझ में आयी कि कुल रकबे के 10 फीसदी में तालाब बनाया जाए तो खेती से आर्थिक लाभ कम से कम पाँच गुना बढ़ जायेगा। और इस कार्यक्रम से इससे अधिक उत्साहजनक परिणाम आये।

ठीक इसी दृष्टि से संस्था द्वारा ग्राम काकुन जिला–महोबा में वर्ष 2009 में एक छोटा तालाब खोदा गया और बड़े हर्ष की बात है कि जून 2014 तक 20 तालाब बनाये जा चुके हैं। संस्था द्वारा प्रेरणा स्वरूप किया गया कार्य एक जल–आन्दोलन बन गया है। यहाँ के किसान सिंचाई द्वारा भरपूर लाभ उठा रहे हैं।

वर्षा जल संचय होने से इस गाँव के कुँओं तथा जमीन के निचले भाग का जल स्तर काफी बढ़ गया है। इस गाँव के आस–पास के पशु-पक्षियों को पीने हेतु भरपूर जल मिल रहा है।

विषय : हमारे गाँव और उनके समग्र विकास में हमारी भूमिका

दिनांक : 27 अक्टूबर 2013, दिन : रविवार

समय : सायंकाल 4 बजे से 6 बजे तक

❖ सहभागी प्रमुख अतिथिगण :

इस संगोष्ठी के मुख्य अतिथि श्री अनुज कुमार झा जिलाधिकारी महोबा, प्रो0 अजित नारायण त्रिपाठी, प्रो0 कमलाकर मिश्र, श्री शुभनारायण सिंह, स्वामी ब्रजचैतन्य जी महाराज, डॉ0 रामदत्त तिवारी, श्री शिवकुमार गोस्वामी (समाजसेवी), श्री संदीप रिछारिया, दैनिक जागरण (महोबा), श्री पुष्पेन्द्र सिंह (जल प्रहरी), डॉ0 अरविन्द खरे, ग्रामोन्नति संस्थान महोबा, श्री राजीव तिवारी, श्री सौरभ तिवारी एवं अनेकों गाँव के प्रधानों, विद्वानों ने बड़ी संख्या (300) में सहभागिता की।

इस संगोष्ठी में चर्चा का मुख्य विषय था कि कैसे बिना सरकारी सहायता के ग्रामवासी अपने स्वप्रयास से अपना समग्र विकास कर सकते हैं।

संगोष्ठी में विभिन्न वक्ताओं ने जलसंरक्षण जैविक खेती, पशुपालन, उन्नत खेती, कृषि– वानिकी, जैव विविधता, कुटीर उद्योगों के माध्यम से आर्थिक उन्नति के रास्ते सुझाये। साथ ही खेती को जीवन संस्कृति और मुख्य व्यवसाय के रूप में आत्मसात करने का दर्शन भी प्रतिपादित किया।

बुन्देलखण्ड क्षेत्र की मुख्य समस्या वर्षा का कम होना, सूखे के कारण घाटे की खेती, अन्ना प्रथा (पशुओं के बाँझ होनें) आदि के कारण किसानों की आत्महत्या है। गाँवों में शराब, गुटखा जैसी नशा सम्बन्धी बुराइयां बढती जा रही हैं, जिससे ग्रामवासियों का जीवनस्तर गिरता जा रहा है। इसके रोकथाम हेतु बाहर से आये हुये अनेक विद्वानों और जिलाधिकारी महोदय ने अपने विचार रखे।

उपस्थित ग्राम–वासियों ने इस संगोष्ठी से प्राप्त अनुभव के आधार पर जीवन जीने हेतु प्रयास करने का अपना संकल्प प्रकट किया।

तालाबों के द्वारा सिचाई कार्य को देखकर इस गाँव के पड़ोसी गाँवों के किसान भी अगले वर्ष बड़ी संख्या में तालाब खुदाने के लिए इच्छुक हैं। साथ ही सरकारी संस्थायें भी किसानों की मदद के लिए साथ आ रही हैं।

❖ वृक्षारोपण एवं बागवानी कार्यक्रम -

संस्था ने बुन्देलखण्ड क्षेत्र महोबा जिले के कुछ गाँवों में पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम के तहत वहाँ के निवासियों को फलदार, इमारती लकडी एव बरगद, पीपल, पाकड़, नीम, जामुन आदि के वृक्षों की महत्ता को समझाया। साथ ही संस्था के आजीवन सदस्य डॉ0 रोहित सेठ, डॉ0 अल्का सेठ के निजी सहयोग से ग्राम काकुन (महोबा) में 6 बीघे के परिसर में एक फल वाटिका भी तैयार करायी। इस वाटिका में प्रतापगढ के आँवले, इलाहाबाद के अमरूद, सागौन, नीबू, अनार, करौंदा आदि के वृक्षों को लगाया गया है। इस वाटिका की हरियाली और फलों के आगमन को देखकर स्थानीय लोगों में बागवानी और वृक्षारोपण के प्रति प्रेरणा उत्पन्न हुई है। इन गाँवों के आसपास के किसान भी इस तरह के कार्य कर रहे हैं।

❖ वैकल्पिक ऊर्जा के स्रोत :

संस्था बुन्देलखण्ड क्षेत्र के ग्राम–काकुन को पर्यावरण, जल संरक्षण, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आर्थिक समृद्धि के कार्यक्रमों के साथ–साथ वैकल्पिक ऊर्जा के प्रति आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास कर रही है। संस्था इसके लिए सौर ऊर्जा, गोबरगैस आदि के माध्यम से ऊर्जा की आवश्यकता पूर्ति हेतु प्रयासरत है।